

श्रीगौर-सन्ध्या-आरती

जय जय गोराचाँदेर आरतिको शोभा ।
जाह्नवी तटवने जगमन लोभा ॥
दक्षिणे निताइ चाँद, वामे गदाधर ।
निकटे अद्वैत श्रीनिवास छत्रधर ॥
बसियाछे गोराचाँद रत्न-सिंहासने ।
आरति करेन ब्रह्मा-आदि देवगणे ॥
नरहरि आदि करि' चामर दुलाय ।
सज्जय मुकुन्द वासुधोष आदि गाय ॥
शङ्ख बाजे, घण्टा बाजे, बाजे करताल ।
मधुर मृदङ्ग बाजे परम रसाल ॥
बहुकोटि चन्द्र जिनि' वदन उज्ज्वल ।
गलदेशे वनमाला करे झलमल ॥
शिव-शुक-नारद प्रेमे गदगद ।
भक्तिविनोद देखे गोरार सम्पद ॥

श्रीयुगल-सन्ध्या-आरती

जय जय राधाकृष्ण युगल-मिलन ।
आरति करये ललितादि सखीगण ॥
मदन-मोहन रूप त्रिभङ्ग सुन्दर ।
पीताम्बर शिखिपुच्छ चूड़ा मनोहर ॥
ललित माधव-बामे वृषभानु कन्या ।
नील-वसना गौरी रूपे गुणे धन्या ॥
नानाविध अलंकार करे झलमल ।
हरिमन-विमोहन वदन उज्ज्वल ॥
विशाखादि सखीजन नाना रागे गाय ।
प्रियनर्म सखीजत चामर दुलाय ॥
श्रीराधा-माधव-पद सरसिज आशे ।
भक्ति विनोद सखी, पदे सुखे भासे ॥